इकाई 14 सुमंगली : कावेरी

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 हिंदी में दलित कहानी : संवेदना और दृष्टि

14.3 सुमंगली : मूल भाव एवं संवेदना

14.4 दलित स्त्री लेखन और कावेरी की कहानियाँ

14.5 सुमंगली : दलित मजदूर स्त्री का दारूण जीवन

14.5.1 दलित नारी का तिहरा शोषण

14.5.2 पुरुष सत्ता का हिंसात्मक रूप

14.6 कथा शिल्प एवं भाषा

14.7 सारांश

14.0 उद्देश्य

'सुमंगली' दलित लेखिका कावेरी की चर्चित कहानी है। कावेरी की यह कहानी उनके 'द्रोणाचार्य एक नहीं' कथा संग्रह में संकलित है। इस कहानी में दलित समाज की एक आधुनिक मज़दूर स्त्री की दुनिया का यथार्थ है। इस दुनिया में सभ्य समाज के नियम और कानून काम नहीं करते हैं। शोषण का ऐसा चक्र दिखता है जिसमें मानवता भी रहम माँगती-सी दिखती है। इस कहानी को पढ़ने के बाद आप भारत की सामाजिक और जातिगत संरचना को समझ सकेंगे जिनमें एक दलित स्त्री को उसके मानव अधिकारों से वंचित कर दिया जाता है। इस समाज व्यवस्था के पुरुषसत्तात्मक वर्चस्व और आतंक को जान सकेंगे जिसमें एक आदमी अत्याचार करने के लिए आजाद है और एक स्त्री उस अत्याचार को सहने के लिए मजबूर है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आपः

- दलित स्त्री लेखन और कावेरी की कहानियों में अभिव्यक्त स्त्रीवादी चेतना से परिचित हो सकेंगे;
- नगर जीवन में दलित स्त्री के बहुआयामी शोषण की दशाओं से अवगत हो सकेंगे;
- दलित स्त्री जीवन की अस्मिता, आकांक्षाओं और सपनों को उनके सामाजिक, आर्थिक संदर्भ में जान सकेंगे;
- दलित स्त्री की रचनाशीलता और चेतना के नवीन रूप को पहचान पाएँगे;
- समाज व्यवस्था में धर्म, संस्कृति और रूढ़िवादिता की शिकार दलित स्त्री के संरक्षण की आवश्यकता को समझ पाँएगे; और
- धर्म, परंपरा, रूढ़िवाद को ढोती समाज व्यवस्था दलित स्त्री के प्रति निरंकुश होकर कैसे उसके प्रति हिंसात्मक रवैया अपनाती है, से परिचित हो सकेंगे।

14-1 ÁLrkouk

कावेरी की प्रतिष्ठा हिन्दी के दलित साहित्य में एक चर्चित कथाकार के रूप में है। उनकी कहानियों का संग्रह 'द्रोणाचार्य एक नहीं' प्रकाशित हो चुका है। इस संग्रह की कहानियों ने आलोचकों का ही नहीं पाठकों के एक बड़े तबके का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। दलित स्त्री जीवन के कई अनछुए पहलू इन कहानियों के माध्यम से व्यक्त हुए हैं। कुल मिलाकर इनकी कहानियाँ शोषण के तंत्र को बेनकाब करती हैं जो द्रोणाचार्य की तरह दलितों को उनके अधिकारों से वंचित रखने का षडयंत्र करता है। दलित का सामना एक द्रोणाचार्य नहीं पूरी उस व्यवस्था से है जिसमें सत्ता पर काबिज हर एक शख्स द्रोणाचार्य की भूमिका अदा करता हुआ दिखाई पड़ता है।

कावेरी की जन्मभूमि बिहार प्रांत भले ही आर्थिक रूप से पिछड़ा क्षेत्र है लेकिन सामाजिक चेतना और संघर्षों की यह उर्वरा भूमि है। महानतम दलित चिंतक बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर के प्रेरणा स्रोत महात्मा बुद्ध की यह कर्मभूमि है। साथ ही भूदान, संपूर्ण क्रांति, दलित आदिवासी राजनीति से लेकर जातिगत संघर्षों की यह रणभूमि है। ऐसे ही परिवेश में कावेरी की रचनात्मक ऊर्जा का विकास हुआ है। उन्होंने शिक्षा में अपने उद्यम से एम.ए. और बी.एड की डिग्रियाँ हासिल कीं और अब एक अध्यापक के रूप में ज्ञान का प्रसार कर रही हैं।

बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर ने कभी कहा था कि "ज्ञान, शेरनी के दूध की तरह है, जो इसे पीता है, वह बोलता नहीं दहाड़ता है।" दलित स्त्री लेखन में अगर दुःख और कराह है, तो प्रतिरोध और संघर्ष की दहाड़ भी है। कावेरी की कहानियों में यह दोनों स्वर बराबर मौजूद हैं। हालाँकि इकाई में संकलित कहानी 'सुमंगली' दलित स्त्री के जीवन की पीड़ा, दुख, वेदना, वंचना और उत्पीड़न का दस्तावेज है।

यह पाठ अन्य पाठों से इस मामले में अलग है कि इसमें लेखक का केवल विचार और उसकी कल्पना ही नहीं बल्कि उसके पास इस जीवन का प्रामाणिक अनुभव भी है। इस यातनापूर्ण त्रास के कई पहलू उसके जीवन के आस–पास घटित होते हैं।

14-2 fgnh e: दलित कहानी : संवेदना और दृ"टि

कहानी ऐसी विधा है जिसमें संवेदनाएँ मुखर हो उठती हैं। इस विधा के द्वारा संवेदनाओं पर विस्तार से रोशनी डालने की गुंजाइश होती है। भावनाएँ संकेतों में ही खत्म नहीं होतीं, बल्कि उन्हें प्रामाणिक उदाहरण घटनाओं, पात्रों और उनके कथनों द्वारा मिलते हैं। इसलिए साहित्य में कहानी हमेशा से चर्चित विधा रही है। अगर हिन्दी दलित कहानी वह भी महिला कहानीकारों की कहानियों के आरंभ और उनकी आवश्यकता पर चर्चा की जाए तो यही कहा जा सकता है कि यह दलित चेतना के संघर्ष, संत्रास, आक्रोश और विरोध की पौध साबित हुई है।

भारतीय वर्ण व्यवस्था ने दलितों पर गुलामी के जो बंधन कसे थे, उन्हें तोड़ने के लिए ही डॉ. आंबेडकर ने दलितों में मुक्ति चेतना जगाई। साथ ही मुक्ति संघर्ष का रास्ता दिखाया। उनका यह आंदोलन सामाजिक, वैचारिक और राजनीतिक आंदोलन था। डॉ. आंबेडकर द्वारा जगाई गई इस संघर्षशील चेतना की ही अभिव्यक्ति है – दलित साहित्य। हिन्दी दलित साहित्यकारों ने सातवें दशक में आकर कहानी विधा को अपनाया। मराठी या कुछ अन्य भाषाओं में यह पहले ही दस्तक दे चुकी थी। सदियों से अमानुषिक प्रताड़ना झेलने के कारण दलित कथाकारों ने अपने रचनाकर्म को एक

आंदोलन माना। इस दौर में मोहनदास नैमिशराय की 'सबसे–बड़ा सुख', ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'अंधेरी बस्ती' जैसी कहानियों द्वारा पाठक दलित अस्मिता और दलित चेतना के संघर्ष की आवाज सुन पाए।

आठवें दशक ने हिन्दी दलित कहानी को कई नए रचनाकार दिए। इन कहानीकारों की चेतना सामाजिक परिवेश की तमाम चुनौतियों से टकराती हुई, स्वयं को तलाशती हुई आगे बढ़ी। ये कहानीकार अपने अनुभवों को आधार बनाकर रोंगटे खड़ी कर देने वाली सच्चाई को पाठक के सामने लेकर आए। ओमप्रकाश वाल्मीकि इसी संदर्भ में कहते हैं कि – "हिन्दी कहानी में नई कहानी, अकहानी, समान्तर कहानी और फिर जनवादी कहानी – आदि पड़ावों से गुजरते हुए वर्तमान हिन्दी कहानी का रूझान उसे वैचारिक प्रतिबद्धता से जोड़ता है। यह एक बदलाव था हिन्दी कहानी के लिए जिसमें यथार्थवादी चित्रण और मध्यवर्गीय जिजीविषा का बहुत ही निकटता से सम्बन्ध प्रस्तुत हुआ था और पाठकों ने कहानी के कल्पना लोक और रोमानी मायावी संसार से मुक्त होकर एक ताजगी का अहसास महसूस किया था।" इसी दशक में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी दलित कहानी ने अपनी पहचान शुरू की।

नवें दशक में आकर हिन्दी में दलित कहानी पाठकों के बीच अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में सफल हुई। अर्थात् हिन्दी दलित कहानी ने अपना एक विशाल पाठक वर्ग तैयार किया। 'हंस' ने इसी दशक में कुछ हिन्दी के दलित कथाकारों ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, सूरजपाल चौहान, डॉ. सुशीला टाकभौरे आदि की कहानियाँ छापी। इसके बाद तो 'संचेतना', 'कथानक', 'पश्यन्ति', 'युद्धरत आम आदमी', आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने हिन्दी दलित कहानियों को छापकर पाठकों, आलोचकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। इस तरह इन पत्र-पत्रिकाओं ने हिन्दी दलित कहानियों और पाठकों के बीच पुल की भूमिका निभाई। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि नवें दशक में ही पहली बार हिन्दी दलित कथाकारों में किसी महिला ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई हिन्दी दलित कविताओं में विमल थोरात, रमणिका गुप्ता सरीखी कवयित्रियों ने तो अपना महत्वपूर्ण योगदान पहले ही देना शुरू कर दिया था। अर्थात् कविताएँ पहले ही दलित नारी लेखन का हिस्सा बन चुकी थीं। अब बारी कहानियों की थी। दलित महिला रचनाकारों ने यह महसूस किया कि दलित नारी के अन्तर्मन की आकांक्षाएँ, उनकी अस्मिता, उनके शोषण की दारूण कथा के हर पहलू को वे अनुभव की प्रामाणिकता के साथ लिख सकती हैं। वे अपने आस-पास ऐसी महिलाओं के जीवन की घटनाओं को देख-सुन चुकी थीं। डॉ. सुशीला टाकभौरे, कावेरी, कुसुम मेघवाल, रजत रानी, मीनू आदि कहानीकारों ने अब कथाओं के विषयवस्तु को विस्तार देना शुरू किया। सामाजिक संकीर्णता, जाति भेदभाव के अलावा कुछ अछूते पहलुओं को उजागर करना शुरू किया। स्त्री लेखन में स्त्री संसार के भीतर चल रहे उहापोह, जाति आधारित तिरस्कार, घृणा और दलित स्त्री के प्रति पुरुषसत्ता का हीनतम व्यवहार, यथास्थितिवादी सोच के विरोध का प्रखर स्वर रेखांकित हुआ है।

डॉ. सुशीला टाकभौरे के शब्दों में कहें तो "परिवार की आर्थिक गतिविधियों में सहभागी होने के बावजूद भी दलित नारी का स्थान परिवार तथा समाज में पुरुष से निम्न रहा। धन, धरती और सत्ता से वंचित रहने के कारण इस वर्ग की आर्थिक और सामाजिक स्थिति अत्यंत दुर्बल रही। इस कारण इस वर्ग की स्त्रियों का यौन शोषण इतर वर्ग के लोगों द्वारा आसान रहा। इस स्थिति का लाभ जी भर कर तथाकथित उच्च वर्ग ने उठाया।" डॉ. सुशीला टाकभौरे का यह कथन दलित महिला लेखन के मूल उद्देश्य को दर्शाता है। दलित साहित्य में पुरुष रचनाकारों द्वारा जिन बिन्दुओं को अनदेखा कर दिया

गया था, उसे महिला रचनाकारों ने अपने कथा-संसार में शामिल किया। अकारण नहीं है कि कावेरी की कहानी 'सुमंगली' को ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित नारी के अंतर्गम को उकेरने वाली कहानी मानते हैं।

इस प्रकार नवें दशक में आकर दलित कहानी का व्यापक विस्तार हुआ। लगभग सभी पहलुओं को कहानी की विषयवस्तु बनाया गया। अब हिन्दी साहित्य में कहानी का तेवर और कलेवर इतर हो चला था। चाहे दलित समाज का व्यक्ति गाँव की वर्ण व्यवस्था, सामंती व्यवस्था में पिसे या छोटे शहरों और महानगरों में पढ़ लिखकर नौकरी करे कहीं भी वह व्यवस्था के कुचक्र से निकल नहीं पाया। परिणामतः दलितों में आक्रोश, विरोध और संघर्ष की तीव्र चेतना अब कहानियों की पहचान बन गई। इसी के मद्देनज़र दलित महिला कथाकारों ने भी मनोयोग से दलित साहित्य में अपनी भागीदारी दी। डॉ. सुशीला टाकभौरे की 'सीलिया' में नायिका सामाजिक उत्पीड़न से लड़कर सम्मान में जीना चाहती है – "और फिर दूसरों की दया पर सम्मान? अपने निजत्व को खोकर दूसरों के शतरंज का मोहरा बनकर रह जाना, बैसाखियों पर चलते हुए जीना-नहीं, कभी नहीं! सिलिया सोचती – 'हम क्या इतने भी लाचार हैं, आत्मसम्मान रहित हैं, हमारा अपना भी तो कुछ अहं भाव है। उन्हें हमारी जरूरत है, हमको उनकी जरूरत नहीं।" यही दलित नारी अस्मिता और आत्मसम्मान की बात इनकी प्रखर चेतना की देन है।"

रजत रानी मीनू की 'सुनीता' कई कठिनाइयों से गुजरकर शिक्षा प्राप्त करती है और बेटों के समक्ष उन्हें पीछे छोड़ते हुए अपनी सम्मानजनक उपस्थिति दर्ज कराती है। "सुनीता के पिताजी ने सुनीता से गाँव का आधुनिकीकरण कराने की बात कही तो उसने मुस्कुराते हुए कहा 'पिताजी मैं क्या कर सकती हूँ? मैं एक लड़की हूँ। यह काम तो आपके बेटे करेंगे, वहीं वंश चालक हैं' छेदालाल बेटी के सामने सिर-झुकाए हुए अपराधी की मुद्रा में खड़े थे।''

कुसुम मेघवाल के कहानी संकलन 'समय के शिलालेख' में जहाँ दलित नारी के अन्तर्मन की व्यथा दर्ज है, वहीं आक्रोश और प्रतिरोध भी है। इनकी 'अंगारा' की नायिका का प्रतिरोध तो पाठकों की कल्पना से परे है। दूसरी ओर रमणिका गुप्ता की 'बहु-जुठाई' में दलित नारियों पर सदियों से हो रहे सवर्णों द्वारा एक निर्मम-निर्लज्ज परिपाटी का पर्दाफाश किया गया है – "सभी की बहू तो ठाकुर जुठालय है और सभे के माय ठाकुर साहब के बाप।"

अब यहाँ कावेरी की अन्य कहानियों पर भी दृष्टिपात करना आवश्यक जान पड़ता है। 'द्रोणाचार्य एक नहीं' कहानी का सुवास शुरू में अत्याचार को सहन नहीं करता। हेडमास्टर साहब से कहता है – "मैं भीरू एकलव्य नहीं कि आप जैसे द्रोणाचार्य के सामने सब कुछ हार जाऊँ आपके स्कूल में क्या सिर्फ ऊँचे कहाने वाले ही पढ़ेंगे। मुझे नहीं चाहिए ऐसी पढ़ाई।" ऐसा दबंग पात्र कहानी के अंत तक आते-आते व्यवस्था के कुचक्र में अपने को घिरा हुआ पाता है – "उसे जिला आपूर्ति अधीक्षक का पद मिलना चाहिए था। परन्तु झूठा आरोप लगा कर डी.सी. इस पद की (अवन्नति) कर सी.ओ.पोस्ट कर दिया है। चिन्ता में सुवास अपने को डुबोए रहता है उसे लगता है कि द्रोणाचार्य दुनिया में एक नहीं है।"

इसी तरह इनकी 'दरियापुर वाली' कहानी में दरियापुर वाली को अंधविश्वास में भरकर चुड़ैल की माँ करार दिया गया। जिसके लिए आशंका है कि वही धनेश्वर के बच्चे को मार डालती है। उसके बच्चे कुपोषण के शिकार हो मर जाते हैं। छठी बार जब मरा बच्चा पैदा होता है तो ओझा के साथ मिलकर योजनानुसार आधी रात को गहरी नींद में उस पर वार किया जाता है। यह कहते हुए कि चुडैल की माँ हो लाख धमकी देने के बावजूद

अपनी बेटी को मना क्यों न किया। इस बच्चे को भी तुम्हीं लोगों ने मारा है। इस कहानी में दिखाया गया है कि कैसे पढ़े-लिखे लोग भी जादू-टोना, भूत-प्रेत आदि अंधविश्वास को मानते हैं। यहाँ तक कि पीएच.डी. की हुई समाजसेविका, दरोगाजी सभी अंधविश्वासी निकले और ओझा द्वारा मिली धमकी पर कोई कार्यवाही नहीं की गई। इस कहानी में भी 'सुमंगली' की तरह ही अत्याचार सहने को मजबूर है दरियापुर वाली। जिसका हश्र कुछ यूँ होता है – "चोटी पकड़कर घसीटते हुए बाहर निकाला बेचारी चिल्लायी कि मुँह पर गरम चिमटा। घसीटते हुए पूजा स्थल पर लाया कमर में बँधी साड़ी कटो छूट गयी, पता नहीं। शरीर पर नया कपड़ा भी नोचकर फाड़ डाला। और बकने लगा बोल तू बेटी को क्यों नहीं मना की। तुमको कब से चेतावनी दी गयी थी इसके साथ ही गरम लोहे की सलाख उसके शरीर पर। .. वह अचेत हो गयी।"

14-3 lexyh % ey Hkko ,o lonuk

कावेरी द्वारा रचित कहानी 'सुमंगली' कथा नायिका सुगिया के त्रासद जीवन का दस्तावेज है। सुगिया एक मेहनतकश मज़दूर है जिसे अपने जन्म और पालनहार के बारे में कुछ भी पता नहीं है। वह आठ–नौ वर्ष की उम्र से ही खुद को ठेकेदार की रखैल के रूप में देखती आई है। बारह वर्ष की छोटी उम्र में ही वह औरत बना दी गई। आज सुगिया का अपना कहलाने वाला कोई नहीं। मानवता के नाम पर भी जो प्यार उसे मिलना चाहिए था वह सुगिया की कुतिया मंगली ने दिया। कहानी के शीर्षक पर गौर करें तो 'सुगिया की मंगली, अर्थात् 'सुमंगली'। कहानी में सुगिया, मंगली (कुतिया) ठेकेदार, दुखना (सुगिया का पति), दुखना की माँ, सुगिया का बच्चा सुखदेव इतने ही पात्र हैं।

बिल्डिंग बनाने वाले ठेकेदार के चंगुल में फँसी निरीह सुगिया क्षुब्ध होती है कि मेहनत से जो मज़दूर बिल्डिंग बनाते हैं, उन्हें उसमें कुछ दिन चैन से रहने का हक नहीं। एक दिन ठेकेदार मासूम सुगिया के साथ घिनौनी हरकत करता है, और सुगिया दुखना की माँ की गोद में रोती है तब दुखना की माँ ने सांत्वना देते हुए इस तबके का एक नंगा सच सामने रख दिया। यही नंगा सच कहानी के उद्देश्य को सामने लाता है – "एकदम चुप हो जा वर्ना उस पिशाच को अगर मालूम हो गया तो तेरी चमड़ी उधेड़ कर रख देगा, हाँ गरीबों का जन्म ही इसलिए हुआ है। हमारी मेहनत से अट्टालिकाएँ तैयार होती हैं और उसके पुरस्कार के बदले में हमारे शरीर को रौंदा जाता है"। भूखों मरने की नौबत आने के डर से सुगिया अपने अत्याचार का विरोध नहीं कर पाती। सुगिया दुखना को ठेकेदार के विरोध में खड़ा होने को उकसाती है। मगर दुखना में इतनी हिम्मत नहीं होती है। चौदह वर्ष की छोटी उम्र में सुगिया ठेकेदार के बच्चे की माँ बनने वाली है, तब डर के मारे ठेकेदार दुखना को डाँटकर सुगिया से सगाई करवाता है। एक दिन दुखना राजमिस्त्री को ईंट गारा देते समय चौथे तल से नीचे गिर जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है। सुगिया के जीवन में दुखों का पहाड़ टूट पड़ता है। दुखना ने सब जानते हुए भी सुगिया के बच्चे को पिता बनकर अपनाया था। सुगिया के दुःखों का पहाड़ अभी भी कम न हुआ। एक दिन उसके बेटे सुखदेव को जोर का बुखार आता है। सुगिया के पास इतने भी पैसे नहीं होते हैं कि वह बेटे का इलाज करवा सके। ठेकेदार के ऊपर आक्रोश होने के बावजूद सुगिया को यह ख्याल आता है कि ठेकेदार ही तो इस बच्चे का असली बाप है वह जरूर मदद करेगा। यही सोचकर वह ठेकेदार के आगे गिड़गिड़ाती है लेकिन हवसी ठेकेदार उसे पैसे देने के पहले अपनी हवस मिटाना चाहता है। सुगिया के लाख गिड़गिड़ाने मिन्नतें करने पर भी वह बच्चे को उसकी गोद से छीनकर अलग कर देता है। उसके याद दिलाने पर कि 'आखिर तुम्हारा ही तो बेटा है। पहले इसकी जान देखो'

वह हैवान उसे गाली देते हुए जान से मारने की धमकी देता है। साथ ही खबरदार भी करता है – "सौ मर्द के पास रहकर मुझे बदनाम करती है। खबरदार जो दुनिया की गन्दगी को मेरे मुँह पर फेंकने की कोशिश की।" सुगिया बच्चे की जान बचाने के लिए अपनी कुर्बानी देती है। ठेकेदार उसे पैसे भी नहीं देता। रोती हुई सुगिया बच्चे को लेकर कूड़ा फेंकवाने वाले ठेकेदार के पास जाती है। कहना न होगा यहाँ कहानीकार ने एक कड़वे सच का पर्दाफाश करते हुए बताया है – "पर हर ठेकेदार का रूप उसे एक जैसा लगा। उसकी जवानी को घूरती हुई दो खूँखार आँखें हर जगह मिलीं।" हारकर सुगिया एक डॉक्टर के आगे याचना करती है। डाक्टर ने बच्चे को देखकर कहा – "बेटी तुमने देर कर दी। अब कोई भी डॉक्टर इसे जिन्दा नहीं कर सकता।" बहुत कोशिश के बाद उसे विश्वास कराया गया कि उसका बच्चा अब जिन्दा नहीं है। सुगिया के दुखों का अन्त यहाँ भी नहीं होता। जवान बेटे और पोते की मौत के दुख से सुगिया का अन्तिम सहारा उसकी सास भी चल बसी। सुगिया के पास अब उसकी हमदर्द मंगली ही थी। फ्लैश बैक शैली में लिखी गई इस कहानी का बड़ा ही मार्मिक अंत है – "मंगली तुझमें और मुझमें क्या फर्क है।" किस्मत को रोती सुगिया अपनी तुलना उस असहाय कुतिया से करती है। यह स्त्री अस्मिता पर दारूण दुख की पराकाष्ठा है। आज भी किसी कामांध बर्बर पुरुष के आगे सुगिया जैसी कितनी ही असहाय मासूम बेबस जीवन जीने को मजबूर हैं। ऐसी स्थिति में हमारे समाज के रूग्ण चेहरे और आंतरिक रूप से सड़े-गले ढाँचे पर यह कहानी सवाल उठाती है। ऐसा समाज तो अपने आपको सभ्य और विकसित कहलाने का हकदार नहीं। कामांध बर्बर ठेकेदार की तुलना किसी कामांध बर्बर जानवर से ही हो सकती है।

f'kYi vkj dyki{k

जहाँ तक लेखिका की भाषा एवं कथाशिल्प का प्रश्न है तो यह कहा जा सकता है कि इस कहानी का प्रभावशाली पक्ष है भाव संवेदना और समाज का यथार्थपरक चित्रण। भाषा में थोड़ा अनगढ़पन है। मगर कहानी की सहज और मुहावरेदार भाषा कहानी के साथ न्याय करती है। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते हैं – "अपने गिरेबान में झाँका, अभागे का सौभाग्य, सिर पर पहाड़ गिर पड़ा, पहाड़ भी जिन्दगी, आदि। साथ ही भदेसपन को समेटे इनकी शब्दावलियाँ कहानी के यथार्थ को निकट बनाए रखती हैं, जैसे कमिन, छिनाल–पतूरिया, एलाउटमेंट–फेलाउटमेंट, चारतल्ला, आगेमाय आदि। कथा में फ्लैश बैक शैली का अच्छा इस्तेमाल किया गया। हालाँकि एक-दो जगह भाषा बनावटी हो गई है। जब सुगिया का पति मर जाता है तब वह बनावटी भाषा में रोती है। साथ ही 'इधर तो आ मेरी बुलबुल' जैसे वाक्यांश में बनावटीपन की झलक आती है। मगर कहना न होगा कथानक, उद्देश्य, भाव-संवेदना के यथार्थचित्रण आदि को ध्यान में रखें तो कहानी अपने उद्देश्य में सफलता हासिल करती है। पुरुषसत्ता और अर्थ तंत्र की अमानवीय प्रवृत्तियों को उजागर करती है और एक नई समतावादी समाज संरचना को रचने का संकल्प करती है।

14-4 nfyr L=h y[ku vkj dkojh dh dgkfu;k

कावेरी की कहानियों के पात्र अगर दबंग हैं, स्वतंत्र जीवन जीने की लालसा रखते हैं, अन्याय के खिलाफ जाते हैं। इन्हीं तथ्यों की अगली मिसाल है 'झलकी' शीर्षक कहानी। 'झलकी' कहानी की झलकी की शादी बूढ़े हारो कोमरी से हुई है, जो पैसे कमाने के चक्कर में कोलवरी में रहता है। यहाँ खेती-खलिहानी, ट्यूबवेल, गृहस्थी आदि संभालती अकेली झलकी के काम में हाथ बँटाने वाले गंगू सिंह के साथ वह सम्बन्ध बनाती है। बिना इस बात की परवाह किए कि समाज क्या कहेगा। वह अपनी एक ब्याहता और एक

कुँआरी बेटी को भी छोड़कर गंगू के साथ चली जाती है। अपने अनमेल विवाह को झेलते रहने से कहीं अच्छा उससे मुक्त होकर चले जाना ही उसे भला लगा। लेकिन उसका यह फैसला भी उसे पुरुष के शोषण–दमन से मुक्ति नहीं दे पाता।

'प्रायश्चित' कहानी में भी कावेरी ने दीपू को अभावों और अपमानों के बीच घिरा पात्र दिखाया है। दीपू में हुनर है। एक अच्छा चित्रकार, होनहार विद्यार्थी होने के बावजूद वह पैसों के अभाव में आगे पढ़ाई नहीं कर पाता। ट्यूशन कराकर गुजारा करता है। उसके पिता ने जिस सेठ से कर्ज लिया था उसका सूद चुकाने की खातिर सेठ की लड़की को ट्यूशन पढ़ाता है ताकि रूपाली डॉक्टर बन सके। वह रूपाली को चाहने लगता है लेकिन रूपाली उसे अपमानित करती हुई उसकी औकात उसे बता देती है। फ्लैश बैक में चलती इस कहानी में जब रूपाली को पता चलता है कि उसे हाउस सर्जन बनाने में जिस दीपू का योगदान है वही पैसों के अभाव में अस्पताल में दम तोड़ देता है। रूपाली को ग्लानि होती है और वह पूजा स्थल पर दीपू के चित्र की आरती उतारती दिखती है।

वास्तव में कावेरी की इन सभी कहानियों पर गौर करें तो सभी कहानियों के मुख्य पात्र शोषण के शिकार हैं। कहीं-न-कहीं अपमानित प्रताड़ित और समाज द्वारा ठुकराए गए हैं। अत्याचार को सहते जाना ही इनकी नियति है। 'झलकी' अगर स्वतंत्र और साहसी है तो भी अंत में गाँव वालों की अटकलें सामने आती हैं कि झलकी को गंगू भूमिहार ने शहर में ले जाकर बेच दिया या उससे वह धंधा करवाता है। इस तरह यह साहसी पात्र भी तथाकथित सवर्ण के शोषण का शिकार बनती है। 'द्रोणाचार्य एक नहीं' के पात्र सुवास में भी प्रतिरोध की चेतना है फिर भी उसे जीवन के हर मोड़ पर इतना अपमानित होना पड़ा है; इतना छला गया है कि आज बड़ा अफसर होने के बावजूद उसे उसके पद से नीचे का पद मिलता है। उसका तबादला असुविधाओं से भरी जगह में होता है। स्कूल के दिनों से मिलते आ रहे अपमान में अफसर बनने के बाद भी न तो तबदीली आई है न उसे दबाए जाने की प्रक्रिया थमी है। अंत में यहाँ भी वही नतीजा निकलता है। लगातार हो रहे अपमान, शोषण और दमन ने सुवास के प्रतिरोध की क्षमताओं का ही दमन कर डाला है। अंत में यहाँ भी यह पात्र शोषण के कुचक्र में फँसा दिखाई देता है। इस तरह कावेरी की कहानियों में उनके पात्र शोषण को सहन करते रहते हैं। इस सहने की सीमा का लगता है कोई अंत नहीं है। एक अंतहीन शोषण .... बस शोषण की मिसाल है इनकी कहानी 'सुमंगली'।

इन्ही सब विभिन्न तेवर के बीच कावेरी की 'द्रोणाचार्य एक नहीं' कथा-संग्रह की कहानियाँ दलित नारी की अन्तर्दशा दिखाकर पाठक के रोंगटे खड़ी कर देती हैं। इस संदर्भ में रमणिका गुप्ता ने कहा है – "कावेरी की सुमंगली दुखभरी गाथा है – लेकिन पढ़ने वालों के मन में दुःख देने वाले के लिए घृणा और क्रोध पैदा करती है। यही उसकी सफलता है।"

शिल्पगत दृष्टिकोण से अगर देखें तो कावेरी की कहानियाँ बहुत सधी हुई नहीं मानी जाएँगी, लेकिन डॉ. एन.सिंह के शब्दों में – "दलित कथा की शक्ति शिल्प में नहीं, सत्य में है।" उनके इस कथन के सहारे दलित कहानी के मिजाज को समझना आसान होगा। आज समाज के बदलते परिवेश में यथार्थपरक संवेदनाओं को उद्‌घाटित करती हुई हिन्दी की जो दलित महिला कथाकार सक्रिय हैं वे हैं, डॉ. सुशीला टाकभौरे, कावेरी, कुसुम मेघवाल, कावेरी, हेमलता माहेश्वर, सुमित्रा महरोल, पूनम तुसामड, रजत रानी मीनू आदि। वास्तव में "हिन्दी दलित कहानी की यह यात्रा सहज और सरल यात्रा नहीं है। लम्बी संघर्ष यात्रा है, जो सातवें दशक से नवें दशक पर काँटों पर चलते हुए लहुलुहान होकर भी अपने विस्फोटक तेवर की पहचान बनाने में सफल रही है। दलित कहानी ने

समस्याओं से मुठभेड़ की है। अपने सर्जनात्मक, आक्रोशित स्वर को यथार्थ की भूमि पर खड़ा करके बदलाव के नए आयाम स्थापित किए हैं। यथार्थ की संघर्षपूर्ण स्थितियों, सामाजिक विषमताओं, भेदभाव, अन्तर्विरोधों को चित्रित करने की प्रवृत्ति उसने किसी दबाव या प्रतिक्रिया के तहत ग्रहण नहीं की है बल्कि यह उसका अपना स्वाभाविक और वस्तुनिष्ठ स्वरूप है।" (ओमप्रकाश वाल्मीकि)

14-5 lexyh % nfyr etnj L=h dk nk:.k thou

आज तक दलितों का गाँव में सामतों, सवर्णों द्वारा शोषण होता आया है। इसमें गाँव के दबंग ज़मीदार से लेकर पंचायत तक सभी शामिल होते हैं। लेकिन कहानी में सुगिया का शोषण करने वाला कोई लम्बरदार या ज़मींदार नहीं बल्कि ठेकेदार है जो पूँजीवादी तंत्र का शक्तिशाली हिस्सा है। पूँजीवादी तंत्र में शहरों के निर्माण के हर एक काम के लिए दी जाने वाली ठेकेदारी में उसकी पूंजी लगी होती है। इसी पूंजी के बल पर वह अनेकानेक ठेके लेने में सफल हो जाता है। निर्माण के काम में लगे मजदूर उसी की मेहरबानी पर टिके होते हैं। यह क्षेत्र उसका एक साम्राज्य होता है जिसमें मजदूरों के शोषण मानो बेलगाम अधिकार भी दे दिया। मज़दूर मकान बनाते हैं और उन्हीं मकानों से बेदखल कर दिए जाते हैं। इस पीड़ा को व्यक्त करते हुए सुगिया कहती है - *"मर-मरकर घर तैयार करो पर हरामज़ादे थोड़े दिन भी चैन नहीं लेने देते। फेंको-फेंकों सामान बाहर निकालो! मकान 'एलॉउटमेंट' हो गया।"* पर उसे समझ में नहीं आता कि यह मुआ 'एलाउटमेंट' और 'फेलाउटमेंट' क्या होता है। इस व्यवस्था में पुलिस प्रशासन और कचहरी जैसी संस्थाएँ भी होती हैं। लेकिन कहानी में ये संस्थाएँ कभी अपनी मौजूदगी दर्ज नहीं करातीं। सुगिया एक स्त्री है और ऊपर से मज़दूर। अनुभव यही कहता है कि हमारे शासन की संस्थाएँ कभी कमजोर के पक्ष में काम नहीं करती हैं। यहाँ तक कि मीडिया की चिंताएँ उच्च वर्ग और मध्य वर्ग तक सिमटी रहती है। दलित स्त्री के उत्पीड़न, दमन होने पर ये संस्थाएँ कभी सक्रिय दखल नहीं देती हैं। इसकी सक्रियता सत्ता, अथवा ठेकेदार की सुरक्षा के लिए होती है। बाल मजदूर कानून का सरेआम बेशरमी से उल्लंघन होने पर भी कानूनी व्यवस्था खामोशी ओढ़ लेती है। ईट भट्टे, भवन, सड़क निर्माण में बाल श्रमिकों से अल्प मजदूरी पर धड़ल्ले से काम करवाया जाता है। सभ्य कहा जाने वाला शहरी समाज इसे अनदेखा करने का आदि हो चुका है जैसे यह काम केवल न्याय, विधि व्यवस्था या फिर स्वयंसेवी संस्थाओं का ही माना जाता है जिससे ठेकेदार वर्ग ने इसका फायदा उठाते हुए मुनाफा कमाने का एक जरिया बना लिया है। मुनाफा कमाने के ऐवज में शोषण, दमन, उत्पीड़न जैसी अमानवीयता को अपनाकर ही पूँजीवाद और जातिवाद आज विकरात्मक रूप ले चुका है। कावेरी ने सुगिया के दारूण जीवन की कठोर, हृदयविदारक सच्चाई को बहुत ही मार्मिक ढंग से उद्घाटित किया है। *डॉ. विमल थोरात ने कहा है – "सुगिया को अपनी कहानी मालूम नहीं। किसने उसे जन्म दिया और किसने पाला, कुछ भी तो नहीं जानती वह। जब से होश संभाला, तभी से उसकी कहानी की शुरुआत हुई है। जब वह आठ या नौ साल की थी, अपने को ठेकेदार की रखैल ही समझा था।"*

सुगिया ठेकेदार की क्रूरता के आगे अकेली है और बेबस भी। उसकी बेबसी का हाल यह है कि अत्याचार का शिकार बनने के बाद भी उसके चुप रहने में ही उसकी खैर है। दुखना की माँ उसे समझाती है – *"चुप रह बेटी चुप रह। यह तो एक न एक दिन होना था, पर तू बड़ी अभागन है री। जो इस छोटी उम्र में ही सब कुछ झेलना पड़ा।" अब एकदम चुप हो जा।"*

यह चुप्पी एक आम पाठक को "सुमंगली" की सुगिया या बाल मज़दूरन की कमजोरी लग सकती है कि आखिर क्यों वह विरोध नहीं करती? लेकिन यह उस बच्ची की नहीं उस

असंवेदनशील समाज की कमजोरी है जिसने दलित और मज़दूर स्त्रियों के चौतरफा शोषण होते हुए देखते रहने की आदत बना रखी है। सुगिया को पता है कि दलित और मज़दूर स्त्री के संघर्ष या विरोध में कोई साथ देने नहीं आएगा। फिर उस विरोध के अंजाम की कल्पना ही उसका साहस क्षीण कर देती है।

पितृसत्ता के वर्चस्व को बयान करती यह सच्चाई स्त्री की अधीनता की कहानी है। मज़दूरी के बदले में जो पूरी मज़दूरी की हकदार है उस पर शारीरिक शोषण क्यों कर लाद दिया गया है? अबोध बालिका दैहिक अत्याचार सहने को मजबूर है क्योंकि सुरक्षा देने प्रदान करने वाली राज्य की संस्थाएँ स्त्री–बालिका शोषण के प्रति असंवेदनशील है। राज्य द्वारा स्त्री को हासिल सुरक्षा देने में कोताही करने पर न्याय देने में हुई देरी पर या कर्तव्य पालन में किए गए भेदभावपूर्ण रवैये पर किसी प्रकार की जवाबदेही तय नहीं है। इसलिए दमनकारियों द्वारा शोषण का सिलसिला अविरोध जारी है। जिसके कारण ही सुमंगली जैसी बेटियों का जीवन असुरक्षित है।

जहाँ जिन्दगी में अपने को बचा ले जाना ही संघर्ष का मूल मकसद है, तो फिर कैसा विरोध और किसका विरोध। सभी कमजोर स्त्री के शोषण को आतुर बैठे हैं। सुगिया ने इस बात को अपने अनुभव से जाना है – *"अपने दुर्भाग्य पर सुबकती सुगिया बच्चे को छाती से चिपकाए कूड़ा फेंकने वाले ठेकेदार के पास भागी-भागी गई। पर हर ठेकेदार का रूप उसे एक जैसा लगा।"*

सुगिया अपने जीवन को सँवारने का प्रयास करती है। माँ–बाप और परिवार के सुख से वंचित सुगिया ने दुखना को अपना हमदर्द खुद बनाया था दुखना से ही पत्नी का रिश्ता बखूभी निभाया। मानवीय रिश्तों से मिली सुरक्षा व्यक्ति को निश्चिंतिता देती है। लेकिन भवन की दुर्घटना में जब दुखना मारा गया तो यह सुरक्षा का कवच भी उससे छिन गया। उसके अकेलेपन का लाभ उठाने कई आए लेकिन मदद के लिए कोई इंसान नहीं आया। एक समाज की इससे बड़ी क्रूरता क्या होगी कि वह अपने ही सदस्य का तिरस्कार करें और तमाम प्रेम, मानवीय ऊष्मा से वंचित रखें।

frgjs 'kks"k.k ls eqfDr dk la?k"kZ

''भारतीय समाज में मेधा और दैहिक श्रम के बीच गहरी फाँक है जो इसे ..... शोषण का खुला मैदान बना देती है" मज़दूरी को निचले दर्जे का काम माना गया और दलित जातियों के लिए मानो इसे शत-प्रतिशत आरक्षित कर दिया गया। दलित समाज गाँव में खेत मज़दूरी करता है। गाँव से काम की तलाश में शहर की ओर पलायन करता है तो यहाँ वह असंगठित क्षेत्र का मज़दूर बन जाता है। वह पेट के लिए किसी भी शर्त पर काम करता है। वास्तव में उसकी आर्थिक शक्ति अपने पूरे शारीरिक श्रम के बाद भी मुश्किल से गुजर-बसर करने लायक ही बनती है। सुगिया भी इसी प्रकार की दिहाड़ी मज़दूर है जो भवन निर्माण में काम करती है। कोई स्त्री इन कार्यों को अपनी पसंद से नहीं करती। सुगिया जैसी स्त्रियों के हालात इस प्रकार हैं कि उनके पास कोई विकल्प नहीं है, यही उनकी मजबूरी है, यही उनकी नियति बन गई। यह मजबूरी ही शोषण की वजह है और ठेकेदारों के फायदे का सबब भी। अपनी कमाई से वह केवल जिंदा रह सकती है। एक गृहस्थ के रूप में भी वह अपनी जरूरतों के लिए ठेकेदार के ऊपर निर्भर है। आर्थिक आजादी का अर्थ अगर वैध जरूरतों को पूरा कर ले जाने की क्षमता से है, तो सुगिया मज़दूरी करने के बाद भी पराश्रित है, ठेकेदार पर निर्भर है। ठेकेदार इस गणित को जानता है। वह स्त्री मज़दूरों को उनकी न्यूनतम मज़दूरी भी नहीं देता, जिससे आर्थिक विवंचना में रहने वाला हर मज़दूर ठेकेदार के पास ही कर्जा लेने पहुँच जाता है। आर्थिक रूप से निर्भरता इंसान को कितना दयनीय, असहाय बना देता है, यह इस कहानी में

बखूबी दर्शाया है। सुगिया की यही स्थिति उसके दैहिक शोषण का कारण है। ठेकेदार हमेशा इसी ताक में रहता है कि जब वह मदद के लिए याचना करने आए तो उसके देह पर अधिकार जमा ले। *"आ, पहले इधर तो आ मेरी बुलबुल! मुझे विश्वास था कि तुम ख़ुद मेरे पास आओगी। मुझे बुलाना नहीं पड़ेगा।"*

कहानी में शोषण का एक अंतहीन रूप दिखता है, जिसके समाप्त होने की कोई उम्मीद भी नहीं दिखाई देती है। कहानी के आरंभ में भी सुगिया अकेली है और कहानी के अंत में भी वह अकेली रह जाती है। सुगिया की यह त्रासदी वास्तव में दलित मज़दूर स्त्री जीवन में तिहरे शोषण को उजागर करती है।

समस्या अगर सामाजिक है तो उसका समाधान भी सामाजिक रूप से ही हो सकता है, व्यक्तिगत रूप से नहीं। सुगिया का दारूण शोषण इसलिए हो रहा है क्योंकि वह दलित समाज की है। लेकिन उसका समूचा संघर्ष खुद को बचाने का, अकेले का संघर्ष है। क्रूर समाज के सामने अकेली स्त्री का संघर्ष की परिणति में ही असफलता होती है। लेखिका इसी सत्य को उजागर करती है। दलित साहित्य मानव को केन्द्र में रखकर, एक समतामूलक समाज की रचना का संकल्प करता है। शोषण की ब्राह्मणवादी और पितृसत्तावादी परंपराओं का विरोध करते हुए समता, स्वाधीनता और न्याय के मूल्यों का समाज बनाना इसके उद्देश्य है। वह उस दिशा की ओर संकेत करता है जो अंततः शोषणमुक्त समताधारित समाज व्यवस्था को कायम करने में सहायक होगा।

महात्मा बुद्ध के शब्दों में –

"तुम्हेहि किच्चम आतप्पम"

अर्थात् मैं तुम्हें केवल मार्ग बता सकता हूँ चलना तो तुम्हें ही होगा। क्योंकि सत्य एक आत्म खोज है कोई इसे दूसरे को दिला नहीं सकता। कहानी ने भी यही कार्य किया है और इसी में कहानी की सार्थकता है।

14-5-1 nfyr ukjh dk frgjk 'kks"k.k

गरीबी ऐसा दुष्चक्र है कि एक बार इसके दायरे में कोई आ जाए तो इसके चक्र से उबर पाना आसान नहीं होता है। सुमंगली का चक्र इससे भी गहरा है, एक तो वह अनाथ गरीब मज़दूर है, दूसरे वह दलित है और तीसरे वह एक स्त्री है। 'सुमंगली' में लेखिका ने उन हालात को दिखाया है, जिसमें वह जकड़ी है। कहानी पढ़ने के बाद पाठक का मन कहता है कि आखिर वह बगावत क्यों नहीं करती? लेकिन यहाँ ध्यान देने योग्य बात यही है कि वह तिहरे शोषण का शिकार है। गरीबी उससे मज़दूर का काम करवाती है, वरना अन्य भारतीय नारी की तरह वह भी या तो घर गृहस्थी संभालती या *पढ़ की परिणति में ही लिखकर जीवन की परिणति में ही* स्तर को सुधारने की ओर अग्रसर होती। लेकिन यहाँ मज़दूरी ने सुगिया को बाजार में खुला छोड़ दिया। जहाँ पर उसे कमाना है ताकि दो जून रोटी जुटा सके। उसकी पूरी ज़िन्दगी दिन और दिहाड़ी के क्रूर गणित पर टिकी है। उसे एक की परिणति में ही एक दिन जीना है तो अगले दिन की मोहलत लेकर।

दूसरा सच यह है कि वह दलित है। सुगिया जाति व्यवस्था के जिस पायदान पर है, उसमें वह विकल्पहीन दिखाई देती है। उसकी वंचना सदियों से चली आ रही वर्ण व्यवस्था की देन है। उसके लिए तो तीनों वर्णों की और पति की सेवा करना उसका पहला कर्त्तव्य है। स्त्री और अछूत के समता, स्वतंत्रता के अधिकार 'मनु' ने छीन कर उसे मात्र दासी आश्रित, निर्भर, अबला की स्थिति में रखा है। अधिकारों के अभाव ही उसे आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर बनाता है जिससे उत्पीड़न, यौन हिंसा की उसे आसान शिकार

बना देते हैं। बच्चे की जान बचाने के उसके प्रयास जब उसे ठेकेदार के सामने लाकर खड़ा कर देते है तो, उसे ठेकेदार की हवस का शिकार हो जाती है। "एक ओर उसके शरीर से खिलवाड़ हो रहा था दूसरी ओर उसका बच्चा निर्जीव सा पड़ा था।" मज़दूर के रूप में उसका शोषण बाजार व्यवस्था कर रही है, तो दलित के रूप में उसका शोषण परंपरावादी जाति व्यवस्था कर रही है।

तीसरा ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि वह एक स्त्री है। कहानी में इस स्तर पर वह शारीरिक और मानसिक शोषण का शिकार बनती है। इस स्तर पर पुरुष, सामंती और शहर की बाजार सत्ता सब मिलकर उसका दोहन करते हैं। स्त्री के रूप में उसकी यातना सबसे दर्दनाक है। नौ–दस वर्ष की उम्र से ठेकेदार की रखैल के रूप में यातना भोगने के बाद – पति का सहारा उसके रेगिस्तान जैसे सूने जीवन में प्रेम और सुरक्षितता का अहसास दे पाया था। जो कुछ पल के लिए ही रह पाया। स्त्री की सबसे बड़ी कामना उसकी संतान होती है। लेकिन अभाव की जिन्दगी ने सुगिया के बच्चे की साँसों की डोर कुछ ही समय में तोड़ दी। यह एक ऐसा कठोर सच था, जिसे जानने के बाद वह सन्न रह जाती है। दर्द जब हद से ज़्यादा बढ़ जाता है, तो कभी-कभी इंसान उसे महसूस करना बंद कर देता है। ऐसा ही सुगिया के साथ होता है जब बड़ी कोशिश के बाद उसे विश्वास कराया गया कि उसका बच्चा मर गया है। तब उसके करूण क्रंदन से दूसरों की आँखें भी नम हो आईं।

'सुमंगली' कहानी में कावेरी का उद्देश्य दलित स्त्री की परिस्थितियों को उनकी सम्पूर्णता में दिखाना है। दलित स्त्री के जीवन का उद्देश्य भी मानवीय गरिमा के साथ जीवनयापन करना है। लेकिन पितृसत्ता, पूँजी सत्ता और जातिसत्ता उसके मकसद के सामने दीवार की तरह हैं। वह दलित पुरुष से अलग तिहरे शोषण का शिकार है। शोषण के इस रूप के बारे में प्रो. विमल थोरात का मानना है – "जाति, लिंग और वर्ग आधारित तिहरे शोषण को झेलती – दलित स्त्री उन विषमतावादी नैतिक मूल्यों, पुरुषसत्ताओं की अधीनता की राजनीति को नकारती है। एक स्वतंत्रचेता मानवी के रूप में सामाजिक समता, आर्थिक समता और लिंग आधारित समता की हकदार वह इस सामाजिक यथार्थ को बदलना चाहती है।"

सुगिया के मन में भी ऐसे ही मानवीय जीवन की कामना है, भले ही उसके जीवन में "प्यार के झोंके तो सपने की तरह आए और चले गए।" कावेरी ने कहानी के माध्यम से जाति, लिंग और वर्ग के स्तर पर सुगिया के सपने को स्वर दिया है, समाज में बदलाव की जरूरत को रेखांकित किया है। सुगिया पराजित है लेकिन उसकी पराजय अंतिम नहीं है। कहानी इस अर्थ में सार्थक है कि वह दलित स्त्री के संघर्ष की लौ को जलाए रखती है, और भविष्य में विजय की उम्मीद को जिन्दा रखती है। दलित कवि पूरन सिंह के शब्दों में कहें तो –

"मैं हारता रहा! इसका यह अर्थ नहीं कि
मैं जीतूँगा ही नहीं। हारना तो
तब होता है जब। युद्ध,
समाप्त हो जाय।"

14.5.2 पु#"ा सत्ता का हिंसात्मक रूप

भारत की समाज व्यवस्था पितृसत्तात्मक है अर्थात् पिता के रूप में पुरुष की ही सत्ता रहती है। समाज में सिद्धांततः स्त्री को देवी बताया गया लेकिन व्यवहार में वह दासी ही रही। 'सुमंगली' कहानी में सुगिया के साथ भी कुछ ऐसा ही घटित होता है। सुगिया के समक्ष

पुरुष वर्ग रक्षक नहीं भक्षक बन कर आया। पति और बेटे के रूप में मिला सानिध्य बस कुछ क्षण तक ही रहा। मौत के क्रूर हाथों ने उन्हें जल्द ही छीन लिया। अकेली रह गई सुगिया। बाद में भी उसके जीवन में जो पुरुष आए वे उसे बसाने नहीं बल्कि उजाड़ने के लिए ही आए। एक बार उसका सुहाग उजड़ गया, तो दूसरी बार उसकी कोख। और अब जिन्दगी में ठेकेदार का आतंक ही मौजूद है। जिनके लिए स्त्री उपभोग की वस्तु है। पत्नी अथवा माँ के रूप में कम-से-कम इंसानी रिश्ते का साथ होता है, जो मानवीय अस्तित्व को बनाए रखता है। लेकिन जातिवादी समाज ऐसी व्यवस्था चाहता है, जहाँ कुछ लोगों की यौन सनक स्वतंत्र रूप से पूरी हो सके। इस तरह स्त्री उनके हवस को पूरा करने वाली उपभोग की वस्तु बन जाती है। इसी वर्चस्ववादी निंरकुश क्रूर समाज ने सुगिया को ऐसी नियति में पहुँचा दिया है, जहाँ वह सोचती है - *"उजड़ी हुई गृहस्थी को वह अब हरा-भरा नहीं देख सकती। वह सोचती शरीर नोचवाने से अच्छा किसी के साथ लग जाए। परन्तु कोई भी तैयार न था। जवानी भर उसके शरीर को ठेकेदारों ने अपनी हवस का शिकार बनाया। इसके अलावा कोई चारा नहीं था सुगिया के पास। अब तो हमदर्द के रूप में मंगली मिल गई थी।"*

इस अकेलेपन में मंगली कुतिया ही उसके साथ है। सुगिया को इस समाज से उम्मीद थी कि सहानुभूति के दो शब्द कोई उससे कहे या उसके दुःख को बाँटे। मगर ऐसा कोई नहीं था जो उसे दो-चार पल का भी साथ दे। शायद मंगली ने उसके जीवन के इस खालीपन को भरने की कोशिश की। उसका दर्द मंगली जो एक कुतिया है, लेकिन उसने सुगिया के जीवन का सूनापन कुछ कम कर दिया। इसी पल वह जानवर की इंसान का दुःख कम करने का कारण बना। जिससे मंगली से वह सुमंगली कहलाने की हकदार भी।

14-6 dFkk f'kYi ,oa Hkk"kk

कावेरी की कहानियों की भाषा आम बोलचाल की भाषा में भी एक खास वर्ग या तबके को इंगित करती है। जहाँ तक 'सुमंगली' की भाषा एवं कथा-शिल्प का प्रश्न है, तो यही कहा जा सकता है कि इस कहानी का प्रभावशाली पक्ष है भाव-संवेदना एवं यथार्थपरक चित्रण के लिए जिस भाषा का इस्तेमाल हुआ है – वह है सहज-सरल बोलचाल की भाषा। कहीं-कहीं अनगढ़पन जरूर है मगर कावेरी की सहज मुहावरेदार भाषा कहानी के साथ न्याय करती है। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते हैं – 'अपने गिरेबान में झाँका', 'अभागे का सौभाग्य', 'सिर पर पहाड़ गिर-पड़ा', 'पहाड़-सी जिन्दगी' आदि। साथ ही भदेसपन को समेटे इनकी शब्दावलियाँ कहानी के यथार्थ को निकट बनाए रखती हैं, जैसे – कामिन, छिनाल-पतूरिया, एलाउटमेण्ट-फेलाउटमेण्ट, चारतल्ला, आगेमाय आदि। हालाँकि एक दो जगह भाषा बनाबटी होई है। जब सुगिया का पति मर जाता है तब वह थोड़ी बनावटी भाषा में रोती है। साथ ही 'इधर तो आ मेरी बुलबुल' जैसे वाक्यांश में बनावटीपन की झलक मिलती है। मगर यह भी एक सच्चाई है कि कावेरी की भाषा में उनके पात्रों के जीवन के सच को बयान करने की समर्थता है। डॉ. विमल थोरात के शब्दों कहें तो – "इन पात्रों की भाषा जीवन के उस पक्ष को उद्घाटित करती है, जहाँ उपेक्षित वर्ग सामाजिक उत्पीड़न, भेदभाव से पीड़ित हैं, उनके जीवन का यह संघर्ष केवल उन्हीं की भाषा में व्यक्त किया जा सकता है। यह एक सत्य है।"

शिल्पगत दृष्टिकोण से देखें तो 'द्रोणाचार्य एक नहीं' कहानी संग्रह की पाँच कहानियों में से तीन कहानियाँ फ्लैशबैक शैली में लिखी गई हैं। कथा में फ्लैशबैक शैली का अच्छा इस्तेमाल किया गया है। फ्लैशबैक शैली में कहानीकार का मन खूब रमा है। यहाँ यह कहना ज़्यादा उचित होगा कि कावेरी फ्लैशबैक शैली में सिद्धहस्त हैं। दरअसल दलित महिला का जीवन इतनी यातनाओं से भरा होता है कि अगर कोई उनका हिसाब लगाने

बैठे या उन्हें गिनना शुरू करें या उन घटनाओं को किसी कहानी में पिराने की चेष्टा करें तो पिछली एक-न-एक घटनाएँ छूटने लगती हैं। किसी बड़ी घटना के सामने आते ही जीवन की सारी घटनाएँ परत-दर-परत उघड़ती जाती हैं, जिसमें फ्लैशबैक में चले जाना नितान्त ही स्वाभाविक अन्दाज है। प्याज के छिलके की हर उस परत की तरह जो आँखों में आँसू ला दें – ऐसी घटनाएँ। संभवतः यही वजह है कि कावेरी फ्लैशबैक शैली का उपयुक्त इस्तेमाल कर पाई है।

हालाँकि यह भी एक सच है कि दलित कहानियाँ कथा-शिल्प को ध्यान में रखकर नहीं लिखी जाती हैं। शिल्पगत दृष्टिकोण से ऐसी कहानियों में सौन्दर्य को ढूँढ़ना व्यर्थ है। क्योंकि ये कहानियाँ कहानी–कला की पूरक नहीं होतीं बल्कि यथार्थपरक भोगे हुए सत्य की संवेदनाओं, घटनाओं और उसके सुदृढ़ भावपक्ष को उजागर करने वाली होती हैं। इनकी सत्यपरक तथ्य को उजागर करते हुए डॉ. एन. सिंह ने कहा है – "दलित कथा की शक्ति शिल्प में नहीं, सत्य में है।"

14-7 lkjk'k

इस इकाई में हम लोग कावेरी द्वारा लिखित "सुमंगली" कहानी के माध्यम से दलित समाज में स्त्रियों की दशा को जान सके। खासकर दलित समाज में आई महिला मज़दूरों की दशा से अवगत हुए, कि किस प्रकार शहरों, महानगरों में भी दलित मज़दूर स्त्री का चौतरफा शोषण होता है। किस तरह वे शोषण के खिलाफ आवाज नहीं उठा पातीं। किस तरह वे जीवन को या स्वयं को जीवित रख पाने की जुगत में मेहनत करने के बावजूद मजबूर हैं। इस कहानी को पढ़ाते हुए हम इस नतीजे पर भी पहुँचते हैं कि समाज में जाति व्यवस्था की विद्रूपता ने इंसानों के जीवन को नरकतुल्य बना दिया है। यह एक ऐसा ज़हर है जो मानवता को शनैःशनैः मारता जा रहा है, और मानवता क्रूरता में तब्दील होती जा रही है। 'सुमंगली' की सुगिया के शोषण के लिए एक नहीं कई जोड़ी आँखे ताक में बैठी हैं। ठेकेदार द्वारा लगातार शोषण होने पर भी उसके बचाव में कोई सामने नहीं आता। न कोई महिला, न कोई पुरुष, क्योंकि सभी मजबूर हैं। साथ ही शोषित होते रहने की परंपरा में जिए जा रहे हैं। वे ठेकेदार या पूरी व्यवस्था से आतंकित भी हैं। उनके सामने अपने जीवन रक्षा के लिए रोजी-रोटी के छिन जाने का डर विकराल रूप धरकर सामने आ जाता है। तभी तो एक अबोध मासूम बच्ची का बचपन छीनकर लगातार उसका शोषण हो रहा है और बाकी मज़दूरों के अंदर उसे बचाने या शोषण करने वाले का विरोध ा करके उसकी रक्षा करने की न तो कहीं छटपटाहट है, न ही कहीं आक्रोश। उल्टे उस मालिक या अन्नदाता के प्रति एक डर है जो इन्हें सर झुकाए उसकी गुलामी करते रहने को मजबूर करती है।

यह कहानी सुधि पाठकों से इस व्यवस्था पर नए सिरे से सोच-विचार करने की माँग करती है। सामाजिक व्यवस्था से लेकर, कानूनी व्यवस्था की विद्रूपताओं को जड़ से खत्म करने की गुहार करती है। लगातार हो रहे स्त्री शोषण से पाठकों को क्षुब्ध भी करती है और आक्रोश से भी भर देती है। निःसंदेह 'सुमंगली' कहानी परिवर्तन की माँग को मजबूत करती है।